लोक कला - नगाड़ा वादन

Duration : 02.39 Transcribed words : 447

- नगाड़े का संगीत -

00.11 रवि कान्त शर्मा : नगाड़ा नाम ही अपने आप में एक बड़ी विशेषता रखती है... और जहाँ नगाड़ा और पुष्कर का नाम आता है, तो वहाँ इसमें विशेष योगदान जो जाता है वो सोलंकी परिवार का है...

00.21 नगाड़ा बजाते हुये नरेन्द्र सोलंकी और नरसी लाल सोलंकी...

00.41 नरसी लाल सोलंकी : मेरा नाम नरसी लाल सोलंकी है... मैं पुष्कर में रहता हूँ... संतोषी माता की ढाणी...

00.45 नरेन्द्र सोलंकी : मेरा नाम नरेन्द्र सोलंकी है... और मैं पुष्कर में संतोषी माता की ढाणी, ब्रह्मा मंदिर के पास में रहता हूँ...

00.45 नगाड़ा बजाते हुये नरेन्द्र सोलंकी और नरसी लाल सोलंकी...

00.50 नरेन्द्र सोलंकी : हमारे जो दादा जी थे, उनके जैसे ससुर जन, हमारे जो दादा जी के नाना जी, उन लोग से हमारे जो पापा के बड़े वाले भाई साहब थे, रामा कृष्ण जी, जो स्वर्गवास हो चुके हैं... वो नगाड़े के जादूगर भी कहलाये... उन्होंने उनसे सीखा था, और उनसे ये परम्परा चल रही है... और फिर हम ब्रह्मा मन्दिर पे हमारा ये, मतलब, शाम को, सुबह सुबह, शाम, ब्रह्मा मन्दिर में बजाते थे...

01.19 नरसी लाल सोलंकी : रोज आरती के समय...

01.20 नरेन्द्र सोलंकी : रोज आरती के समय... लेकिन ब्रह्मा मंदिर में अब इलैक्ट्रोनिक नगाड़ा आ गया है तो हम वहाँ से निकल चुके हैं और अब घाटों पे...

01.24 नरसी लाल सोलंकी : 40 - 45 सालों से यहाँ बजा रहे हैं...

01.25 नरेन्द्र सोलंकी : घाटों पे बजा रहे हैं...

01.27 (नरसी लाल सोलंकी एवं नरेन्द्र सोलंकी शंख बजा रहे हैं)

01.31 नगाड़ा बजाते हुये नरेन्द्र सोलंकी और नरसी लाल सोलंकी...

01.44 नरेन्द्र सोलंकी : नगाड़ा निकल नहीं पा रहा था... ये गाँव, जैसे कि पहले गाँव में जैसे राजा महाराजा हो गये, राजपूत महाराज, उन्हीं के, मतलब, दरबार में, वहीं गढ़ो में ही बजाया जाता था... शादी ब्याह और उसी काम में आता था... लेकिन हमारे, हमारे ताऊ जी और हमारे पिता जी के प्रयासों से इस नगाड़ों को उन्होंने, आज हम लोगों को भी अच्छा स्टेज, मतलब, स्टेज मिल चुका है, उनकी वजह से... काफी जगह, ऑल ओवर वर्ल्ड में इसकी पहचान बना दी है...

02.09 रवि कान्त शर्मा : ये जो संस्कृति इन्होंने चलाई है नगाड़ा वादन की, और फर्स्ट, शुरूआत में ब्रह्मा मन्दिर में और पुष्कर राज के किनारे पर बजाते रहते थे... पर धीमे धीमे यहाँ पर आने वाले लोग, जो इनकी कला से, के कद्रदान थे, धीमे धीमे उन्हें खींचने लगे... और आज पूरे विश्व में इस नगाड़े की, का वादन, इस नगाड़े की कला, वो लोग चारों ओर बिखेर रहे हैं...

02.32 नगाड़ा बजाते हुये नरेन्द्र सोलंकी और नरसी लाल सोलंकी...